रुचिरा

द्वितीयो भागः

सप्तमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

0755

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished

755 – रुचिरा (द्वितीयो भागः)
सप्तमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

ISBN 81-7450-645-4

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928

संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण
मार्च 2010 चैत्र 1932

पुनर्मुद्रण
फरवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
अक्तूबर 2013 आश्विन 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937
जनवरी 2018 माघ 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
मार्च 2021 फाल्गुन 1942 (NTR)

PD NTR RPS

© ***राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् , 2010***

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ....द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : *विपिन दिवान*
सहायक संपादक : *ओमप्रकाश*
उत्पादन सहायक : ....

आवरण
कल्लोल मजूमदार

सज्जा
अरविन्दर चावला

चित्रांकन
कल्लोल मजूमदार

© NCERT not to be republished

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या (2018 तमे वर्षे) पुनरीक्षिते चास्मिन् संस्करणे अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य

not to be republished © NCERT

विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नवदेहली
20 नवम्बर 2006

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अर्कनाथ चौधरी, *प्रोफ़ेसर*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर कैंपस, जयपुर।

कमलाकान्त मिश्र, *पूर्व प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रवाचक* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

दु:शासन ओझा, *प्राचार्य*, केंद्रीय विद्यालय, पुरी, ओड़ीशा।

देवकी सेनगुप्ता, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत कुंज, नयी दिल्ली।

नारायण दाश, *शिक्षक* (संस्कृत), सर्वकारीय उच्च विद्यालय, गुम्मा, गजपति, ओड़ीशा।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* (संस्कृत), रा. व. मा. बा. विद्यालय, नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

वासुदेव शास्त्री, *संस्कृत प्रभारी* (सेवानिवृत्त), एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तरांचल।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

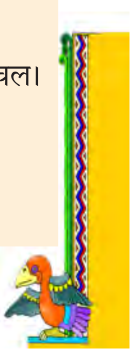

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् डॉ. रामास्वामी आयंगर, *निदेशक* (अवकाश प्राप्त), चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन, बेंगलूरु एवं डॉ. विभा रानी दूबे, *रीडर* (संस्कृत), महिला महाविद्यालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी की आभारी है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासंभव योगदान दिया है। प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, *कुलपति*, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली; प्रो. रमेश भारद्वाज, *संस्कृत विभाग*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रो. रंजना अरोड़ा, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; प्रो. जतीन्द्र मोहन मिश्र, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; प्रो. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.; डॉ. आभा झा, *पी.जी.टी.*, (संस्कृत), गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली तथा श्रीमती लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, *टी.जी.टी.*, (संस्कृत), केंद्रिय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली ने पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है। परिषद् सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

परिषद् डॉ. सम्पदानन्द मिश्र के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक निर्माण में विविध सहयोग के लिए परशुराम कौशिक, *प्रभारी*, कंप्यूटर स्टेशन, भाषा विभाग; आलोक कुमार शर्मा, *शोध सहायक*, कुमारी प्रीति झा, जे.पी.एफ., (संस्कृत) तथा *डी.टी.पी. ऑपरेटर* नरेन्द्र कुमार वर्मा, कमलेश आर्या, राजीव एवं श्रीमती रेखा शर्मा धन्यवाद के पात्र हैं।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक पुनरीक्षण समिति

राधावल्लभ त्रिपाठी, *कुलपति*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जनकपुरी, नयी दिल्ली।

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

उमा शंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार।

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

पंकज कुमार मिश्र, *प्रवक्ता* (संस्कृत), सेंट स्टीफ़ेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता*, एम. वी. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, दिल्ली।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* (संस्कृत), रा. व. मा. बा. विद्यालय, नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड।

रणजित बेहेरा (समन्वयक), *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

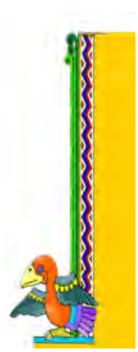

© NCERT not to be republished

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

M K Gandhi

not to be republished © NCERT

भूमिका

संस्कृत भाषा प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, इतिहास, कला, विज्ञान आदि विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। संस्कृत के व्याकरण एवं वाक्य संरचना का प्रभाव भी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर परिलक्षित होता है। सम्प्रेषणात्मक उपागम के आधार पर संस्कृत के शिक्षण को विद्यालय स्तर पर सुगम, रुचिकर एवं सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्वीकृत पाठ्यक्रम के क्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत भाषा-विभाग द्वारा उच्चप्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकसित होने वाली नवीन पुस्तक शृङ्खला **रुचिरा** का विकास किया गया है। इनमें वैविध्यपूर्ण ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है।

रुचिरा पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार रुचिवर्धक सामग्री से विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं में संस्कृत भाषा के प्रयोग में कुशलता तो प्रदान करेगी ही, साथ ही संस्कृत साहित्य के प्रति उत्सुकता एवं सम्मान भी पैदा करेगी।

इसी शृङ्खला का द्वितीय पुष्प **रुचिरा द्वितीयो भागः** (पुनरीक्षित संस्करण 2018) छात्र-छात्राओं के लिए प्रस्तुत है। इस पुस्तक के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों की अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर माध्यम से संस्कृत में ही हो जिससे विद्यार्थी संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की कुशलता विकसित कर सकें।

संस्कृत भाषा की छन्दःसम्पदा की लय एवं गेयता का आनन्द छात्रों को प्राप्त हो, एतदर्थ कुछ नवीन गीत भी इस पुस्तक में दिये गए हैं। पाठ्य-सामग्री को रोचक बनाने के लिए कुछ पाठों की रचना संवाद अथवा नाट्य-शैली में की गई है। वर्णनात्मक-पाठों *में 'पण्डिता रमाबाई', 'विश्वबन्धुत्वम्' और 'अमृतं संस्कृतम्'* 'अनारिकायाः जिज्ञासा' एवं कथा पाठों *में 'दुर्बुद्धिः विनश्यति'(पञ्चतन्त्र की संपादित कथा)*, *'स्वावलम्बनम्'*, *'समवायो हि दुर्जयः'* आदि में प्रेरणास्पद विषयवस्तु को प्रस्तुत किया गया है। संवादात्मक पाठों में छात्रों को आनन्द की अनुभूति हो सके, इसके लिए *'हास्यबालकविसम्मेलनम्'* जैसे पाठों को भी स्थान दिया गया है। राष्ट्रध्वज के महत्त्व को बताने के लिए संवादात्मक शैली में *'त्रिवर्णः ध्वजः'* पाठ को इस पुस्तक में समाहित किया गया है।

पद्य-पाठों के अन्तर्गत *'सुभाषितानि'*, *'सदाचारः'*, *'विद्याधनम्'* तथा नवीन विधा लोरी के रूप में *'लालनगीतम्'* आदि पाठों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी बातें बताई गई हैं। इस पुस्तक में नाटक के रूप में *'सङ्कल्पः सिद्धिदायकः'* पाठ का समावेश किया गया है। इस प्रकार इस पुस्तक में कुल 15 पाठ हैं। कठिन शब्दों का अर्थ-बोध कराने के लिए छात्रों की सुविधा हेतु

प्रत्येक पाठ के अन्त में दिये गए शब्दार्थ (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी) पुस्तक की विशेषता है। पाठान्त में विविध प्रश्नों वाली अभ्यास-चारिका दी गई है जिससे भाषा-संरचनात्मक-ज्ञान की वृद्धि में विद्यार्थियों को सहायता मिल सके। इसके अतिरिक्त कतिपय पाठों के साथ '*ध्यातव्यम्*' शीर्षक के अंतर्गत सरल संस्कृत पढ़ने-लिखने-समझने तथा कहीं पर हिन्दी माध्यम से कुछ अतिरिक्त एवं उपयोगी जानकारी दी गयी है। आकर्षक चित्रों के आधार पर स्वकल्पना द्वारा सरल वाक्यों का निर्माण भी कर सकेंगे। पुस्तक के तदनुसार अन्त में '*परिशिष्टम्*' के अन्तर्गत कारक और विभक्तियों का परिचय दिया गया है जिससे विद्यार्थी इनके अन्तर को समझ सकें। साथ ही पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दों एवं धातुओं में से कुछ प्रमुख शब्दों तथा धातुओं के रूप भी दिये गए हैं-

संक्षेप में **रुचिरा द्वितीयो भागः** में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया गया है-

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- प्रदत्त निर्देशों के आधार पर प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न-निर्माण का कौशल
- भाषिक तत्त्वों (श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन) का कौशल
- जीवनमूल्यों से युक्त संस्कृत-पाठों का परिचय
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप कर सकने की क्षमता
- संस्कृत की वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- रोचक कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम का संयोजन कर सकने का सामर्थ्य
- अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित ज्ञानवर्धक अभ्यास
- प्रत्येक पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ

शिक्षक की भूमिका

कोई भी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक कितनी ही वैज्ञानिक और सुरुचिपूर्ण क्यों न हो, अध्यापन-कार्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ अध्यापन की सफलता के लिए तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है, वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम् बनाने के लिए यथावसर दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं, उनका विद्यार्थियों से अभिनय भी कराया जा सकता है।

यद्यपि इस संकलन को विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, तथापि इसको और अधिक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

पाठानुक्रमणिका

	पुरोवाक्	*iii*
	भूमिका	*ix*
	मङ्गलम्	*xii*
प्रथमः पाठः	सुभाषितानि	1
द्वितीयः पाठः	दुर्बुद्धिः विनश्यति	6
तृतीयः पाठः	स्वावलम्बनम्	12
चतुर्थः पाठः	हास्यबालकविसम्मेलनम्	18
पञ्चमः पाठः	पण्डिता रमाबाई	25
षष्ठः पाठः	सदाचारः	30
सप्तमः पाठः	सङ्कल्पः सिद्धिदायकः	35
अष्टमः पाठः	त्रिवर्णः ध्वजः	45
नवमः पाठः	अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि	49
दशमः पाठः	विश्वबन्धुत्वम्	55
एकादशः पाठः	समवायो हि दुर्जयः	61
द्वादशः पाठः	विद्याधनम्	66
त्रयोदशः पाठः	अमृतं संस्कृतम्	71
चतुर्दशः पाठः	अनारिकायाः जिज्ञासा	77
पञ्चदशः पाठः	लालनगीतम्	82
परिशिष्टम्	वर्णविचारः, कारकम्, शब्दरूपाणि धातुरूपाणि च	87

© NCERT not to be republished

मङ्गलम्

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः॥1॥
यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः॥2॥
यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः॥3॥
यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः॥4॥

भावार्थ

जैसे आकाश और पृथ्वी दोनों न डरते हैं और न दुःख देते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥1॥
जैसे दिन और रात न दुःख देते हैं और न डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥2॥
जैसे सूर्य और चन्द्र न दुःख देते हैं और न डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥3॥
जैसे सत्य और असत्य न दुःख देते हैं और न डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥4॥

© NCERT not to be republished